Bc – राजा मसीहा का राजदूत | 1

– Save This Page as a PDF–

राजा मसीहा का राजदूत



यूहन्ना का बपतिस्मा और विश्वासियों का
बपतिस्मा एक ही बात नहीं है। “बपतिस्मा” के पीछे मूल विचार है- पहचान । जब भी आप बपतिस्मा लेते हैं, आप एक व्यक्ति और/या संदेश और/या समूह के साथ पहचान करते हैं। वास्तव में, बपतिस्मा एक मसीहाई प्रथा बनने से बहुत पहले एक यहूदी प्रथा थी। यहूदी धर्म में परिवर्तित होने पर अन्यजातियों को जो कुछ करना था उनमें से बपतिस्मा लेना था। जब अन्यजातियों को यहूदी धर्म में बपतिस्मा दिया गया, तो उन्होंने स्वयं को यहूदी लोगों और यहूदी धर्म को अपने धर्म के रूप में पहचान लिया। एक विश्वासी के बपतिस्मा में, आप मसीहा की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के साथ पहचान करते हैं (रोमियों ६:१-२३)।

यूहन्ना के बपतिस्मे के मामले में, जिन लोगों ने योचनन द्वारा बपतिस्मा लिया था, जो पश्चाताप का बपतिस्मा था, उन्होंने स्वयं को उनके संदेश के साथ पहचाना और खुद को मसीहा और उनके राज्य को स्वीकार करने के लिए तैयार किया। योहोना का संदेश विश्वासियों के बपतिस्मा के समान नहीं है। यही कारण है कि योहोना द्वारा बपतिस्मा लेने वालों को बाद में विश्वासियों के बपतिस्मा में फिर से बपतिस्मा लेना पड़ा। इसका एक उदाहरण प्रेरितों के काम १९:१-७ में पाया जा सकता है जहां यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा बपतिस्मा लेने वाले शिष्यों को विश्वासियों के बपतिस्मा में फिर से बपतिस्मा दिया गया था। उन्हें योचनन का संदेश मिला था। उन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मे के द्वारा स्वयं को मसीह को प्रकट करने के बाद स्वीकार करने के लिए प्रतिबद्ध किया। दुर्भाग्य से, यीशु के मसीहा के रूप में पहचाने जाने से पहले उन्होंने इस्राएल छोड़ दिया था। जब वे इफिसुस में रब्बी शाऊल से मिले, तो उसने उन्हें बताया कि मसीहा कौन था। अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार जब यूहन्ना ने उन्हें बपतिस्मा दिया, तो उन्होंने यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया, और इसलिए पौलुस ने उन्हें विश्वासियों के बपतिस्मा में बपतिस्मा देना जारी रखा क्योंकि यूहन्ना का बपतिस्मा एक ही बात

Bc – राजा मसीहा का राजदूत | 2

नहीं थी। हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ने जो बपतिस्मा लिया वह धर्मांतरित बपतिस्मा नहीं था, और न ही यह वह था जिसे हम आज विश्वासियों का बपतिस्मा कहते हैं, लेकिन यह यूहन्ना का बपतिस्मा था।